नीलकुरिंजी फूलों की नई किस्में

हाल ही में पश्चिमी घाट के संथानपारा क्षेत्र की कालीपारा पहाड़ियों में **नीलकुरिंजी फूलों** की 6 नई किस्मों की पहचान की गई है।

- केरल के इडुक्की में कालीपारा पहाड़ियों पर एक विशाल क्षेत्र में नीलकुरिंजी के फूल खिले हुए हैं।

नीलकुरिंजी के फूल:

- **परिचय:**
  - नीलकुरिंजी मे 'नील' का अर्थ है नीला और 'कुरिंजी' का अर्थ फूलों से है।
    - परिपक्वता पर फूलों का हल्का नीला रंग बैंगनी-नीले रंग में बदल जाता है।
  - इन फूलों के आधार पर ही "**नीलगिरि पर्वत शृंखला**" का नाम पड़ा है।
  - इसका नाम प्रसिद्ध **कुंती नदी** के नाम पर रखा गया है जो केरल के साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान से होकर बहती है, जहाँ यह फूल बहुतायत में पाया जाता है।
  - यह आमतौर पर **1,300-2,400 मीटर की ऊँचाई** पर उगता है।
- **वैज्ञानिक नाम:**
  - कुंथियाना स्ट्रोबिलेंथिस
- **नई किस्मों की खोज:**
  - नीलकुरिंजी के फूलों के वे प्रकार जिनकी पहचान पहाड़ी शृंखलाओं में की गई है, उनमें शामिल हैं:
    - **स्ट्रोबिलेंथिस अनामलिका**
    - **स्ट्रोबिलेंथिस हेयनियस**
    - **स्ट्रोबिलेंथिस पुलनेयेंसिस**
    - **स्ट्रोबिलेंथिस नियोएस्पर**
- **आवास**:
  - सभी नीलकुरिंजी प्रजातियाँ **पश्चिमी घाट** के शोला वन के लिये स्थानिक हैं।
  - आँकड़ों के अनुसार, भारत में नीलकुरिंजी की 40 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
- **फूलों का खिलना:**
  - यह फूल 12 वर्ष में एक बार खिलता है क्योंकि फूलों के परागण के लिये लंबी अवधि की आवश्यकता होती है।
    - यह आखिरी बार वर्ष 2006 में खिला था। अगली संभावना वर्ष 2018 में खिलने की थी, लेकिन वनाग्नि के कारण नीलकुरिंजी उस वर्ष नहीं देखा गया था।
- **अन्य तथ्य:**
  - तमिलनाडु की '**पालियाँ**' जनजाति द्वारा उम्र की गणना के लिये नीलकुरिंजी के फूलों का उपयोग किया जाता है।
  - दुनिया में नीलकुरिंजी की लगभग 250 प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

स्रोत: द हिंदू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/new-varieties-of-neelakurinji-flowers